

भारत-चीन-श्रीलंका ट्रायंगल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में चीन के वदेश मंत्री (CFM) ने श्रीलंका का दौरा किया है।

- इस बैठक के दौरान चीन के वदेश मंत्री ने हृदि महासागर द्वीपीय राष्ट्रों के लिये एक मंच का प्रस्ताव रखा और यह भी कहा कि किसी भी 'तृतीय पक्ष' को चीन-श्रीलंका संबंधों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।
- यद्यपि 'तृतीय-पक्ष' के नाम का खुलासा नहीं किया गया, कति कई जानकार मानते हैं कि यह भारत के लिये कहा गया था।



प्रमुख बंदि

- **श्रीलंका यात्रा की मुख्य वशिषताएँ**
 - चीन के वदेश मंत्री की यात्रा में ऐतहासिक 'रबर-राइस पैक्ट' (1952) की 70वीं वर्षगाँठ और चीन एवं श्रीलंका के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 65वीं वर्षगाँठ के अवसर पर समारोह शुरू करने की परकिल्पना की गई थी।
 - रबर-राइस पैक्ट के तहत चीन ने रबड़ और अन्य आपूर्तियों के आयात हेतु प्रतबिद्धता ज़ाहरि की थी, क्योंकि श्रीलंका, जो कि रबड़ का एक प्रमुख निर्यातक है, चावल की कीमत में वृद्धि और रबड़ की कीमत में गरिबट का सामना कर रहा था।
 - चीन के वदेश मंत्री द्वारा कोलंबो में कोलंबो पोर्ट सट्टी और हंबनटोटा पोर्ट (श्रीलंका में) का जकिर करते हुए इस बात पर जोर दिया गया कि दोनों पक्षों को इनका सही से उपयोग करना चाहिये।
 - उन्होंने श्रीलंका से **कषेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी** (Regional Comprehensive Economic Partnership- RCEP) की संभावनाओं पर वचिार करने और मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत फरि से शुरू करने का आग्रह किया।
 - सर्वसम्मति और तालमेल बनाने तथा विकास को बढ़ावा देने के लिये "हृदि महासागर द्वीप देशों के विकास पर एक मंच" भी प्रस्तावति किया गया था।
- **चीन-श्रीलंका संबंधों के बारे में:**
 - **श्रीलंका का सबसे बड़ा ऋणदाता:** चीन श्रीलंका का सबसे बड़ा द्वपिकषीय ऋणदाता है।
 - श्रीलंका के सार्वजनिक कषेत्र को चीन द्वारा प्रदत्त ऋण केंद्र सरकार के वदेशी ऋण का लगभग 15% है।
 - श्रीलंका अपने वदेशी ऋण के बोझ को दूर करने के लिये चीनी ऋण पर बहुत अधिक निर्भर है।
 - **अवसंरचना परियोजनाओं में नविश:** चीन ने वर्ष 2006-19 के बीच श्रीलंका की बुनयिदी ढाँचा परियोजनाओं में लगभग 12 अरब अमेरिकी डॉलर का नविश किया है।
 - **छोटे राष्ट्रों के हतियों में बदलाव:** श्रीलंका का आर्थिक संकट इसे अपनी नीतियों को बीजगि के हतियों के साथ संरेखति करने के लिये आगे और बाध्य कर सकता है।
 - **हृदि महासागर में चीन का प्रभाव:** चीन का दक्षणि एशिया और हृदि महासागर में दक्षणि पूरव एशिया तथा प्रशांत कषेत्र की तुलना में अधिक प्रभाव है।

- चीन को ताइवान के वरिध में, **दक्षिण चीन सागर** और पूरवी एशिया में क्षेत्रीय वविदों व अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ असंख्य संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है ।

■ भारत की चिंताएँ:

- **सागर पहल का वरिध:** प्रस्तावति हदि महासागर द्वीपीय देशों के मंच ने भारत के प्रधानमंत्री की '**सागर**' (**Security and Growth for All in the Region- SAGAR**) पहल के वरिध में आवाज उठाई ।
 - **हदि महासागर क्षेत्र (IOR)** में एक सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की रणनीतिक भूमिका है ।
- **वकिस से संबंधति मुद्दे: 99 वर्ष के पटटे के हसिसे के रूप में चीन का श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर औपचारिक नथितरण है ।**
 - श्रीलंका ने कोलंबो बंदरगाह शहर के चारों ओर एक वशिष आर्थिक क्षेत्र और चीन द्वारा वतितपोषति एक नया आर्थिक आयोग स्थापति करने का नरिणय लयिा है ।
 - भारत के ट्रांस-शपिमेंट कार्गो का 60% कार्य कोलंबो बंदरगाह से होता है ।
 - हंबनटोटा और कोलंबो पोर्ट सटि परयोजना को पटटे पर देने से चीनी नौसेना की लयि हदि महासागर में स्थायी उपस्थतिलिगभग तय हो गई है जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लयि चिंताजनक है ।
 - भारत को घेरने की **चीनी रणनीतिको स्ट्रगिऑफ परल्स स्ट्रैटेजी** कहा गया है ।
- **भारत के पड़ोसियों पर प्रभाव:** बांग्लादेश, नेपाल और मालदीव जैसे अन्य दक्षिण एशियाई देश भी बड़े पैमाने पर बुनयिादी ढाँचा परयोजनाओं के वतितपोषण के लयि चीन की ओर रुख कर रहे हैं ।

आगे की राह

- **सामरिक हतियों का संरक्षण:** श्रीलंका के साथ नेबरहुड फ्रस्ट की नीतिको पोषति करना भारत के लयि हदि महासागर क्षेत्र में अपने रणनीतिक हतियों को संरक्षण करने हेतु महत्त्वपूर्ण है ।
- **क्षेत्रीय मंचों का लाभ उठाना:** बमिस्टेक, सारक, सागर और आईओआर जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग प्रौद्योगिकी संचालति कृषि, समुद्री क्षेत्र के वकिस, आईटी एवं संचार बुनयिादी ढाँचे आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लयि कयिा जा सकता है ।
- **चीन के वसितार को रोकना:** भारत को ज़ाफना में कांकेसंतुराई बंदरगाह और त्रकिोमाली में तेल टैंक फार्म परयोजना पर काम करना जारी रखना होगा ताका यह सुनिश्चित हो सके का चीन श्रीलंका में आगे कोई पैठ नहीं बना सके ।
 - दोनों देश आर्थिक लचीलापन पैदा करने के लयि नजी क्षेत्र के नविश को बढ़ाने में भी सहयोग कर सकते हैं ।
- **भारत की सॉफ्ट पावर का लाभ उठाना:** प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत अपनी आईटी कंपनियों की उपस्थतिका वसितार करके श्रीलंका में रोज़गार के अवसर पैदा कर सकता है ।
 - ये संगठन हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोज़गार पैदा कर सकते हैं तथा द्वीपीय राष्ट्र की सेवा अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं ।

स्रोत- द हदि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-china-sri-lanka-triangle>